शकुन स्कन्ध

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवदी

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,

डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

यह निमित्तशास्त्र के नाम से भी जाना जाता है। 'शकुन' का संस्कृत में अर्थ पक्षी विशेष है। किसी कार्य से सम्बन्धित दिखाई देने वाले लक्षण जो शुभ या अशुभ की सूचना देते हैं, शकुन कहलाते हैं। शकुन संहिताशास्त्र का ही विभाग है। पूर्वमध्यकाल तक इसने पृथक् स्थान प्राप्त नहीं किया था, किन्तु संहिता के अन्तर्गत ही इसका विषय आता था। ईस्वी सन् की दसवीं, ग्यारहवीं और बारहवीं शतियों में इस विषय पर स्वतन्त्र विचार होने लग गया था, जिससे इसने अलग शास्त्र का रूप प्राप्त कर लिया।

वराहमिहिर ने कहा भी है कि मनुष्यों के पूर्व जन्मार्चित जो शुभाशुभ कर्म है, उन कर्मों के शुभाशुभ फल को गमनकालिक शकुन प्रकाशित करते हैं-

अन्यजन्मान्तरकृतं कर्म पुंसां शुभाशुभम्।

यत्तस्यशकुनः पाकं निवेदयति गच्छताम्।।

शकुन का स्थान ज्योतिष में अप्रतिम है।शकुनशास्त्र इस सिद्धान्त पर आधारित है कि विश्व में जो कुछ होता है, वह पूर्व से ही निश्चित है। नवीन और अकस्मात् कुछ नहीं होता। ईश्वरीय सर्वज्ञता में भूत-भविष्य दोनों काल वर्तमान ही रहते हैं। मनुष्य जब ज्योतिषशास्त्र के प्रायः सभी भेदों में अनभिज्ञ रहा होगा तब भी अंग-स्फुरण, पशुचेष्टा अथवा प्राकृतिक हलचलों द्वारा भविष्य का ज्ञान प्राप्त कर लेता था। शकुन शास्त्र ऋषि प्रणीत है। अन्धकासुर के वध के समय भगवान शंकर ने पशु-पक्षियों के जो अस्वाभाविक हलचल देखे थे वे ही शकुन नाम से कहे गये हैं। पुनः तारकासुर से युद्ध के पूर्व स्वामी कार्तिकेय ने यह उपदेश दिया तथा इन्द्र ने कश्यप को तथा कश्यप ने गरुड़ को गरुड़ ने अत्रि, गर्ग, भृगु, पराशर आदि मुनियों को शकुन का उपदेश किया है। वराहमिहिर ने शाकुन का वर्णन करते हुए पूर्वाचार्यों को आदर देने के लिए उनके ज्ञान की प्रशंसा की है। वे कहते हैं कि शुक्र, इन्द्र, बृहस्पति, कपिष्ठल, गरुड, भागुरि, देवल इनके मत को देखकर ऋषभाचार्य ने जो कहा है, भरद्वाज मुनि के मत को देखकर अवन्ती के

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

महाराजाधिराज राजा श्री द्रव्यवर्धन ने जो कहा है, संस्कृत और प्राकृत भाषा में जो सप्तर्षियों का मत है और गर्ग आदि यात्राकारियों ने जो कहा है, उन सबको देखकर वराहमिहिर ने शिष्यों की प्रसन्नता के लिए ज्ञानयुक्त शाकुन संग्रह किया है। यथा-

यच्छक्रशुक्रवागीशकपिष्ठलगरुत्मताम्।
मतेभ्यः प्राह ऋषभो भागुरेर्देवलस्य च।।
भारद्वाजमतं दृष्ट्वा यच्च श्रीद्रव्यवर्धनः।
आवन्तिकः प्राह नृपो महाराजाधिराजकः।।
सप्तर्षीणां मतं यच्च संस्कृतं प्राकृतं च यत्।
यानि चोक्तानि गर्गाद्यैर्यात्राकारैश्च भूरिभिः।।
तानि दृष्ट्वा चकारेमं सर्वशाकुनसंग्रहम्।
वराहमिहिरः प्रीत्या शिष्याणां ज्ञानमुत्तम्।।

शकुनों का वर्णन वैदिक संहिताओं, ब्राह्मण ग्रन्थों, रामायण, महाभारत में प्राप्त होता है यद्यपि ये सूत्रात्मक रूप में ही उपलब्ध होते हैं। किन्तु वराहमिहिर ने बृहत्संहिता में इनका विस्तृत विवेचन किया है जिसके अन्तर्गत शकुनों के क्षणदीप्त, तिथिदीप्त, नक्षत्रदीप्त, वायुदीप्त, सूर्यदीप्त, गतिदीप्त, स्थानदीप्त, ध्वनिदीप्त आदि प्रकार कहे हैं-

क्षणतिथ्युडुवातार्कैर्देवदीप्तो यथोत्तरम्।
क्रियादीप्तो गतिस्थानभावस्वरविचेष्टितै।।

महल, देवमन्दिर, मङ्गल स्थान (देवता, ब्राह्मण और गायों से अध्यासित), मनोज्ञ (हरा घास और शीतल द्रुम की छाया), मधुर फल वाले, दूध वाले, फल वाले और फूल वाले वृक्ष इस सब पर स्थित शकुन शुभ फल देने वाले होते हैं-

हर्म्यप्रासादमङ्गल्यमनोज्ञस्थानसंस्थिताः।
श्रेष्ठा मधुरसक्षीरफलपुष्पद्रुमेषु च।।

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

दिन में दिनचर शकुन पर्वत के ऊपर और रात्रि में रात्रिचर शकुन जलप्राय देश में स्थित हों तो बली होते हैं-

स्वकाले गिरितोयस्था बलिनो द्युनिशाचराः।

यदि दो या उससे अधिक शकुनों का दर्शन हो तो गति, जाति, बल, स्थान, हर्ष, सत्व, स्वर इनमें जो बली हो उसी के अनुसार शुभाशुभ फल होता है। अपने स्थान से अनुलोम गति वाले शकुन भी बली होते हैं। इसके विपरीत होने पर निर्बल होते हैं-

जवजातिबलस्थानहर्षसत्त्वस्वरान्विताः।

स्वभूमावनुलोमाश्च तदूनाः स्युर्विवर्जिताः।।

पशु-पक्षी (अश्व, गज, उल्लूक, कुक्कुट, सर्प, श्वान आदि) के लक्षण एवं चेष्टाओं के आधार पर भी फल का कथन किया जाता है। मुर्गा, हाथी, पिरिली, मयूर, खदिरचंचु, छिक्कर (मृगजाति), सिंहनाद (पक्षी-विशेष), कूटपूरी ये सब पूर्व दिशा में बली हैं-

कुक्कुटेभपिरिल्यश्च शिखिवञ्जुलछिक्कराः।

बलिनः सिंहनादश्च कूटपूरी च पूर्वतः।।

सियार, उल्लू, तोता, कौआ, चकवा, चकई, भालू, उलूक, चेटिका, कबूतर, रोना, चिल्लाना, क्रूर शब्द ये सब दक्षिण दिशा में बली होते हैं-

क्रोष्टुकोलूकहरीतकाककोकर्क्षपिङ्गलाः।

कपोतरुदिताक्रन्दक्रूरशब्दाश्च याम्यतः।।

गाय, खरहा, क्रौञ्च पक्षी, लोमड़ी, हंस, कुरब पक्षी, मार्जार, विवाह आदि उत्सव, बाजे, गीत, हास्य ये सब पश्चिम दिशा में बली होते हैं-

गोशशक्रौञ्चलोमाशहंसोत्क्रोशकपिञ्जलाः।

बिडालोत्सववादित्रगीतहासाश्च वारुणाः।।

शतपत्र, कुरङ्ग, चूहा, मृग, घोड़ा, गदहा, कोयल, चाष, बिल में रहने वाले जीव, पुण्याह वाचन का शब्द, घण्टा, शंख ये सब उत्तर दिशा में बली होते हैं-

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

शतपत्रकुरङ्गाखुमृगैकशफकोकिलाः।

चाषशल्यकपुण्याहघण्टाशंखरवा उदक्।।

यात्रा का विषय विभाग करते हुए इसके अन्तर्गत तिथि, दिन, करण, नक्षत्र, मुहूर्त, लग्न, योग, अंगस्फुरण, स्वप्न, विजयदायक स्नानविधान, गृहयज्ञ, गणयाग, हवन की अग्नि से निमित्त परीक्षा, हाथी, घोड़ों की चेष्टाओं से भविष्य विचार, सैनिक की परस्पर वार्ता से शकुन, सैन्य चेष्टा आदि विषयों का समावेश है।

वन में गाय का शकुन, गाँव में वन के शकुन, रात्रि में दिन के शकुन और दिन में रात्रि के शकुन का ग्रहण नहीं करना चाहिए-

न ग्राम्योऽण्यों ग्राह्यो नारण्यो ग्राम्यसंस्थितः।

दिवाचरो न शर्वर्यां न च रक्तंचरो दिवा।।

विषम, भयङ्कर, दीन, जर्जर ये सब शब्द शुभ नहीं होते। अर्काभिमुख होकर, मधुर स्वर से और हर्षपूर्वक किए गए सब शब्द शुभ होते हैं-

भिन्नभैरवदीनार्त्तपरुषक्षामजर्जराः।

स्वना नेष्टाः शुभाः शान्तहृष्टप्रकृतिपूरिताः।।

यात्रा में मध्यम, षड्ज,गान्धार ये तीनों स्वर शुभ और षड्ज, मध्यम, गान्धार, ऋषभ ये चार स्वर हितकारी होते हैं-

ग्रामौ मध्यमषड्जौ तु गान्धारश्चेति शोभनाः।

षड्जमध्यमगान्धारा ऋषभश्च स्वरा हिताः।।

यात्रा समय में जाहक, सर्प, खरगोश, सूअर, गोह इनका नाम लेना शुभकारी है। इससे उलटा वानर तथा भालू का फल होता है-

जाहकाहिशशक्रोडगोधानां कीर्त्तनं शुभम्।

रुतं सन्दर्शनं नेष्टं प्रतीपं वानरर्क्षयोः।।

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

अब कतिपय अन्य शकुनों का संकेतमात्र किया जा रहा है। कबूतर का वाहन, आसन और शय्या पर बैठना तथा घर में प्रवेश करना मनुष्यों के लिए अशुभकारी है। भारद्वाज पक्षी के सब प्रकार के शब्द शुभकारी हैं। यदि गमन करने वाले के सम्मुख सर्प आ जाए तो शत्रु समागम मानना चाहिए। यदि खञ्जन पक्षी कमल या घोड़ा, हाथी और सर्प के मस्तक पर दिखाई दे तो राज्य को देने वाला होता है। यदि सारस के जोड़े का एक साथ शब्द हो तो इष्ट फल देने वाला होता है, एक का शब्द शुभ नहीं होता है। यदि सूर्योदय के समय एक या बहुत से कुत्ते एकत्रित होकर सूर्लय की तरफ मुख करके रोवें तो शीघ्र देश में अन्य स्वामी होने को सूचित करता है। यदि अग्निकोण में स्थित कुत्ता सूर्य की तरफ मुख करके रोवे तो शीघ्र चोर और अग्नि का भय, मध्याह्नकाल में सूर्य की तरफ मुख करके रोवे तो अग्नि, भय और मृत्यु तथा अपराह्न में सूर्याभिमुख होकर रोवे तो रुधिरस्त्राव के साथ लड़ाई को सूचित करता है। सूर्यास्त काल में सूर्य की तरफ मुख करके कुत्ता रोवे तो किसानों को शीघ्र भय तथा प्रदोष काल में वायव्य कोण में स्थिर होकर रोवे तो वायु और चोरों से भय देता है। यदि आधी रात में उत्तर की तरफ मुँह करके कुत्ता रोवे तो ब्राह्मण को पीड़ा और गायों की चोरी होने को सूचित करता है। यदि रात्रि के अन्त में ईशान कोण की तरफ मुख करके कुत्ता रोवे तो कुमारी को दूषित, अग्नि का भय और स्त्रियों के गर्भपात करता है। यदि वर्षाकाल में तृण से बने हुए गृह, प्रासाद या उत्तम गृह में स्थित होकर कुत्ता ऊँचे स्वर से शब्द करे तो अत्यधिक वृष्टि को सूचित करता है। अन्य ऋतु में पूर्वोक्त स्थान में स्थित होकर शब्द करे तो मृत्यु, अग्निभय और रोगभय को सूचित करता है। यदि वर्षाकाल में अनावृष्टि होने पर कुत्ता जल में स्नान करके बार-बार पार्श्व परिवर्तन और रेचन करता हुआ स्थित हो या ताड़ते हुए जल को पीवे तो बारह रोज पीछे वृष्टि होती है। यदि कुत्ता गमन करने वाले के दोनों पाँवों को सूंघे तो यात्रा का निषेध करता है, यदि वहीं पर गमन करने वाला निश्चल होकर स्थित हो जाए तो अभीष्ट अर्थ की सिद्धि करता है। यदि एक स्थान में स्थित गमन करने वाले के जूते को सूँघे तो शीघ्र यात्रा को सूचित करता है। यदि वृक्ष के समीप में कुत्ता शब्द करे तो वर्षा होती है। दीन गाय राजा को अमङ्गल करने वाली, अपने पाँवों से पृथिवी को कुरेदने वाली गाय रोग करने वाली, अश्रुपूर्ण नेत्रवाली गाय स्वामी की मृत्यु करने वाली और डर कर अति शब्द करने वाली गाय चोरों से भय कराने वाली होती है। मधुर शब्द करती हुई गाय घर में आये तो गायों की गोष्ठ की वृद्धि के लिए होती है,

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

तथा जल से आर्द्र शरीर वाली और रोमांचों से युक्त गाय गोष्ठवृद्धि के लिए धन्य है। इसी तरह महिषी भी फल देती है। स्थिर स्थान, पत्थर,गृह, देवालय, पृथिवी पर जल के समीप इन स्थानों में स्थित शकुन हों तो स्थिर कार्य का शुभाशुभ फल होता है। यदि वे शकुन चल प्रदेश आदि में स्थित हों तो भविष्यत् कार्य के लिए सूचित करता है। जलचर (कर्क, मकर और मीन) लग्न, जलसंज्ञक नक्षत्र (पूर्वाषाढ़ा और शतभिषा), जलसंज्ञक मुहूर्त, पश्चिम दिशा, जल स्थान इन स्थानों में तथा पक्षावशान (अमा और पूर्णिमा) में स्थित प्रदीप्त शकुन शब्द करें तो सब वृष्टि करने वाले होते हैं। शान्त भी जलचरी शकुन जलादि में स्थित हों तो वृष्टि करने वाले होते हैं।

स्वप्न के समय हमारा अन्तर्मन स्थूल शरीर के बन्धन से स्वतन्त्र होता है। हमारे स्वभाव, विचारादि के प्रभाव उसपर बन्धन नहीं लगा पाते, केवल प्रेरणा देते हैं। ऐसे समय वह प्रकृति की सूक्ष्म सूचनाओं को बहुत स्पष्ट रूप से ग्रहण करता है। स्वप्न में देखे हुए दृश्यों के शुभाशुभ विचार अत्यन्त विस्तृत हैं और इस विषय पर स्वतन्त्र ग्रन्थ भी हैं। अनेक बार हमारे शरीर के विभिन्न अंग फड़कते हैं या हथेलियों अथवा पैरों के तलों में खुजली होती है। ये बातें शरीर में वायु आदि दोष से भी होती हैं तथा शकुन के रूप में भी। प्रायः शकुन के रूप में ये लक्षण तब प्रकट होते हैं, जब हम किसी कार्य, वस्तु या व्यक्ति के सम्बन्ध में सोच रहे हों। ये शकुन उसी सम्बन्ध में सूचना देते हैं।

इस प्रकार हम पाते हैं कि शकुन-शास्त्र दो भागों में विभक्त किया जा सकता है-एक तो ग्रह, नक्षत्र, राशि, दिन आदि पर निर्भर फलित ज्योतिष से सम्बन्ध रखने वाला शकुन-शास्त्र और दूसरा दृश्य पदार्थों के द्वारा परिणाम प्रकट करने वाला शकुन शास्त्र। वैसे दोनों को सर्वथा पृथक् रखना शक्य नहीं है, क्योंकि दृश्य शकुनों में भी काल, स्थान, नक्षत्र आदि का अनेक बार विचार होता है और उससे विभिन्न परिणाम निश्चित होते हैं। इसी प्रकार फलित में भी बाह्य चिह्नों की अपेक्षा होती है।यह भी कहा जा सकता है कि शकुन के कई प्रकार माने गए हैं। पशु एवं पक्षियों के शब्द तथा उनकी चेष्टाएं, स्वप्न, अपने अंगों का फड़कना या शरीर के विभिन्न स्थानों में खुजली होना, आकाश से विभिन्न प्रकार की वर्षा या ग्रहों की आकृतियों में दृश्य परिवर्तन, वनस्पतियों तथा तृणों में विशेष परिवर्तन, प्रतिमा, पाषाण तथा जल में विशेष लक्षण दर्शित होना, यात्रादि में मिलने वाले पदार्थ, छींक-ये शकुनों के मुख्य भेद हैं।

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

शकुन जब स्वतः होते हैं तभी उनका प्रभाव भी होता है। आजकल जैसे नियमों का दुरुपयोग होता है, वैसे ही शकुन सम्बन्धी धारणा का दुरुपयोग चल पड़ता है। दीपावली के दिन बहेलिया घर-घर घूमकर बँधा हुआ नीलकण्ठ दिखलाता है और बड़े लोग यात्रा-शकुन बनाने के लिए जल भरे घड़े मार्ग में रखने की व्यवस्था करते हैं-ऐसे कृत्रिम शकुन से कोई परिणाम नहीं हुआ करता। इससे मनुष्य अपने-आप को भ्रान्त ढंग से सन्तुष्ट करता है और सिद्धान्त का परिहास ही होता है। शकुन का प्रभाव समझने के लिए भाव-जगत् और उसकी प्रेरणा माने बिना काम चल नहीं सकता।

शकुन का महत्त्व प्रतिपादित करते हुए कहा गया है कि यदि शकुन प्रतिकूल हो, किन्तु तिथि, नक्षत्र, वार तथा लग्न उत्तम हो तब भी शुभ फल प्राप्त नहीं होगा, किन्तु यदि नक्षत्र, वार, लग्नादि प्रतिकूल हों तथा शकुन उत्तम हो तो निश्चित ही कार्य सिद्धि होती है-

नक्षत्रवारेस्तिथिभिः सुलग्नैः कार्यं न किञ्चिच्छकुने विरुद्धे।

दोषेऽपि तेषां शकुनेऽनुकूले सदैव सिध्यन्ति समीहितानि।।

दैव एवं पुरुषार्थ में प्रायः पुरुषार्थ ही बली दिखायी पड़ता है। यदि ऐसा न होता तो नीति वचन अथवा नीतिशास्त्रों का प्रयोग ही व्यर्थ होता जिसके आधार पर राजा लोग समाज, राष्ट्र या सम्पूर्ण पृथिवी का पालन करते हैं। शकुन जानने वाले ज्योतिर्विदों को गणितादि की आवश्यकता नहीं पड़ती है। पञ्चाङ्ग, फलित अथवा जन्मसमय आदि के विना भविष्य फल शकुन द्वारा जाना जाता है। वेद, पुराण, इतिहास, स्मृति तथा अन्य सभी भारतीय ग्रन्थों में कहीं-न-कहीं शकुन का वर्णन अवश्य मिलता है।

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi